महामारी के दौर में शिक्षा, स्कूल और बच्चे

सीखने-सिखाने की नई खिड़कियाँ खोलने के जतन

कोरोना के चलते स्कूल अनिश्चित काल के लिए बन्द हैं। बच्चे घरों तक सीमित हैं। सरकारें, अभिभावक और शिक्षा में काम करने वाली स्वयंसेवी संस्थाएँ उनकी पढ़ाई-लिखाई के लिए लगातार वैकल्पिक कोशिशों में जुटी हैं। पाठशाला के छठवें अंक का 'संवाद' बच्चों की पढ़ाई-लिखाई के इन्हीं वैकल्पिक प्रयासों की पड़ताल के लिए आयोजित किया गया है। विषय है— महामारी के दौर में शिक्षा, स्कूल और बच्चे। इस संवाद में प्राथमिक शाला श्रीकोट गंगानाली श्रीनगर की शिक्षक रश्मि गौड़, प्राथमिक शाला धमतरी रायपुर के शिक्षक अनूप ध्रुव, अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन स्कूल टोंक, राजस्थान के प्रधानाचार्य छोटेलाल, अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन भोपाल मध्यप्रदेश के लीडर अभिषेक सिंह राठौड़, एकलव्य फ़ाउण्डेशन भोपाल से टुलटुल बिस्वास, अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन पिथौरागढ़ से मुनीर और अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन, अभंगपुर, रायपुर से मयंक मिश्रा ने अपने अनुभव साझा किए। सं.

गुरबचन सिंह : हमारे संवाद का विषय है 'कोविड-19 के दौरान शिक्षा और बच्चे'।

आज की संवाद की प्रक्रिया में हमारे साथ कई साथी हैं। रश्मि गौड़, श्रीकोट गंगानाली श्रीनगर पौड़ी के प्राथमिक स्कूल में शिक्षिका हैं। दूसरे साथी अनूप ध्रुव, प्राथमिक शाला धमतरी, रायपुर में शिक्षक हैं। हमारे साथ अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन स्कूल, टोंक, राजस्थान के प्रधानाचार्य छोटेलालजी हैं। अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन, भोपाल, मध्यप्रदेश से अभिषेक सिंह राठौड़ भी इस संवाद में हैं। एकलव्य भोपाल से टुलटुल बिस्वास हैं। अगले साथी अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन, पिथौरागढ़ से मुनीर हैं, और अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन, अभंगपुर, रायपुर से मयंक मिश्रा हैं।

रजनी : कोविड की वजह से मार्च 2020 से स्कूल बन्द हैं। हालाँकि बच्चों को शिक्षा से जोड़े रखने के लिए कई तरह के प्रयास हुए हैं और जारी भी हैं, पर स्कूल कब खुलेंगे, इस बारे में अभी भी निश्चित तौर पर कुछ कहा नहीं जा सकता। आज का संवाद इसी मुद्दे पर है, जिसके लिए ये प्रमुख प्रश्न चुने गए हैं :

(1) पिछले कुछ महीनों से स्कूल बन्द हैं, स्कूलों के बन्द होने को बच्चों ने कैसे लिया है?

(2) स्कूलों के बन्द होने का बच्चों पर क्या प्रभाव पड़ा है, और उनके सामने किस तरह की चुनौतियाँ आई हैं? इसी तरह, शिक्षकों ने स्कूलों के बन्द होने को कैसे लिया है, उसका इनपर क्या प्रभाव पड़ा है, और उनके सामने किस तरह की चुनौतियाँ आई हैं?

(3) शिक्षा को जारी रखने के लिए विभिन्न संस्थाओं द्वारा कई प्रयास भी किए जा रहे हैं। किस तरह के प्रयास किए जा रहे हैं? इनसे क्या फ़ायदे हुए हैं? इनमें क्या दिक़्क़तें आई हैं?

(4) इस महामारी के दौरान शिक्षा को लेकर जो बहस शुरू हुई है उसमें शिक्षा को लेकर हमारी किस तरह की समझ बनी है? जैसे— ऑनलाइन शिक्षा के बारे में पहले भी बात होती थी, लेकिन अब ऑनलाइन शिक्षा हो रही है तो

लोगों को उसकी कमियाँ भी नज़र आ रही हैं। उसमें क्या किया जा सकता है, क्या नहीं?

(5) ऐसी कौन-सी बहस / समझ है जो इस दौरान बनी है जिसे हम शिक्षा में आगे भी इस्तेमाल कर सकते हैं? क्या कुछ ऐसी समझ भी है जो हमें बताती है कि फलाँ तरह की चीज़ें शिक्षा के लिए कुछ ख़ास उपयोगी साबित नहीं हो सकतीं? हम इन सभी प्रश्नों पर बातचीत करेंगे।

रश्मि : मार्च में जब विद्यालय बन्द हुए, उस समय बच्चों की वार्षिक परीक्षा शुरू होने वाली थी, ऐसे में स्कूल बन्द हो जाने पर हर बच्चे को बहुत ख़ुशी होती है और परीक्षाओं से भी अगर छुटकारा मिल जाए तो ये ख़ुशी दोहरी हो जाती है। इस समय छुट्टी को बच्चों ने ख़ुशी के रूप में लिया। लेकिन धीरे-धीरे बच्चों ने महसूस

फोटो : रश्मि गौड़

किया कि वो घर में क़ैद-से हो गए हैं। बच्चों की दिनचर्या और रोज़मर्रा की गतिविधियों में कुछ परिवर्तन आ गए। बच्चे अपने सहपाठियों और दोस्तों के साथ खेल नहीं पा रहे थे। ये स्थिति जब लम्बे समय तक रही तो बच्चे टीवी, कम्प्यूटर या मोबाइल देखने में ज़्यादा समय लगाने लगे। घर में लगातार रहने से 2-4 दिन की पढ़ाई पर कोई भी कुछ नहीं कहता, लेकिन जब लम्बा समय हो गया तो परिवार के बड़ों ने भी कहना शुरू कर दिया कि कब तक ख़ाली बैठे रहोगे, पढ़ो।

शुरुआती छुट्टियों में मैंने बच्चों को फ़ोन किया तब वे बहुत ख़ुश थे, लेकिन बाद में वे कहने लगे कि मैडम आप स्कूल कब बुलाओगे, हम घर पर डाँट खा रहे हैं। लगातार अपने अभिभावकों के साथ रहते हुए बच्चे उकताने लगे। मैंने बच्चों से बातचीत कर उनके घर का माहौल जानने की कोशिश की, यह भी पता किया कि उनके पास स्मार्टफ़ोन है या नहीं जिससे वीडियो कॉल के ज़रिए उनसे बातचीत की जा सके। यह भी बात हुई कि पढ़ाई जारी रखने के लिए आपको कुछ भेज दें तो कैसा लगेगा। बच्चों ने वीडियो कॉल किए और उन्हें बहुत अच्छा लगा कि हम कुछ जान पा रहे हैं। एक दिन मैं बच्चों से वीडियो कॉल पर बातचीत कर रही थी, उन्हें मेरी छोटी बच्ची और मेरे पीछे घर की कुछ चीज़ें दिखीं। बच्चे कहने लगे, मैडम, अपना पूरा घर दिखा दो। मैंने कहा कि मैं घर दिखाती हूँ, और मैंने उन्हें घर दिखाया। वो शायद ये जानना चाह रहे थे कि मैडम का घर कैसा है? मैंने भी कहा कि आप सब भी अपना घर दिखाइए। अगले दिन 'रसोईघर' पर एक कविता भेजी। मैंने उनसे कहा कि आपके घर में भी इस तरह की चीज़ें होंगी, आप देखो और उनके नाम अपनी कॉपी में लिख लो।

आगे हम बच्चों को वॉट्सएप पर काम देने लगे, कविताएँ सुनाने लगे। उन्हें बताया गया कि मास्क का उपयोग क्यों करना है और हम घर पर कपड़े और डोरी से भी मास्क बना सकते हैं। बाद में बच्चों ने वीडियो में दिखाया कि उन्होंने मम्मी के साथ मिलकर पूरे परिवार के लिए मास्क बना दिए हैं। जैसे-जैसे हमने देखा कि बच्चे प्रतिक्रिया दे रहे हैं, हमने धीरे-धीरे उनको शिक्षण से भी जोड़ना शुरू किया। अप्रैल और मई तक बच्चे थोड़ा पढ़ने के मूड में आ गए थे। हमने गूगल मीट पर भी कुछ बच्चों को जोड़ दिया था। लेकिन इसमें दिक़्क़त आ रही थी। 70% बच्चों के पास साधारण फ़ोन थे और उनसे हम सिर्फ़ बात कर पा रहे थे, वे वीडियो कॉल से जुड़ नहीं पा रहे थे। जिनको हम ऑनलाइन जोड़ भी पा रहे थे उनके साथ भी कक्षा अन्तःक्रिया वाली चीज़ें ठीक से नहीं हो पा रही थीं। कभी-कभी समय भी मुताबिक़

नहीं हो पाता था, क्योंकि अभिभावक रोज़ी-रोटी की तलाश में बाहर निकल जाते हैं और फ़ोन उनके पास ही रहता है। कक्षा शाम को ही हो सकती है जब वे घर आते हैं। फिर सारे टीचर उसी समय सम्पर्क करते हैं जब फ़ोन घर पर हो। यदि उस परिवार में 3-4 बच्चे हैं और सभी अलग कक्षाओं में हैं या अलग स्कूल में पढ़ते हैं तो भी फ़ोन बच्चों को उपलब्ध नहीं हो पाता। जिन बच्चों के पास स्मार्टफ़ोन नहीं था, हम उनसे केवल यह पूछ रहे थे कि वे क्या कर रहे हैं और कैसे हैं? हम उन्हें जैसे ये पाठ पढ़िए करने को नहीं कह सकते थे। तब हमने वर्कशीट बनाई। हमारे इलाक़े में कोविड का बहुत ज़्यादा प्रभाव नहीं रहा है। हम कुछ शिक्षक मिलकर बच्चों के घर पर गए और उनसे बातचीत की।

फोटो : रश्मि गौड़

बच्चों को भी अच्छा लगा, कई दिन बाद वे हमसे मुलाक़ात कर पाए थे। हमने पंचायत भवन में 5-7 बच्चों के साथ वर्कशीट पर काम किया। इसमें दो-तीन चीज़ें हुईं।

एक वर्कशीट हम लोगों ने ही बनाई, उसमें हमने हर पेज पर कुछ गतिविधियाँ व उन्हें करने की जगह बना रखी थी। यह एक बुकलेट जैसी थी। वर्कशीट में रंगीन चित्र थे और रुचिकर गतिविधियाँ थीं जो वे कर पाएँ। छोटे बच्चों के लिए रंग भरने व चित्र बनाने की गतिविधियाँ ज़्यादा थीं। जो बच्चे किताब ही नहीं ख़रीद पाए थे उनके लिए वर्कशीट पढ़ने का अच्छा ज़रिया साबित हुआ। हालाँकि कुछ बच्चों तक हम फिर भी नहीं पहुँच पाए, क्योंकि कुछ लोग वापस अपने गाँव चले गए थे। हमारे स्कूल के 6 बच्चे 25-30 किलोमीटर से ज़्यादा दूर अपने गाँव चले गए हैं, उनसे हमारी मुलाक़ात नहीं हो पाई। हम वॉट्सएप के ज़रिए उनको काम भेज रहे हैं, पर वो उन कामों को कब देख रहे हैं पता नहीं। ऑनलाइन शिक्षण को मैं बहुत अच्छा तरीक़ा नहीं मान रही हूँ क्योंकि इसमें बच्चों के साथ प्रत्यक्ष रूप से जुड़ नहीं पा रहे हैं। सिर्फ़ एक तरफ़ा सम्प्रेषण हो रहा है। गूगल मीट बच्चों के लिए नया है, अतः उसे उपयोग करना नहीं जानते। कुछ बच्चे लिंक भी नहीं खोल पाते। यदि लिंक खोल भी लिया तो वो अपने-आप को म्यूट कर देते हैं और फिर अनम्यूट नहीं कर पाते। इसी तरह कभी बच्चे अपना वीडियो ऑन कर लेते हैं, तो कभी उन्हें कनेक्टिविटी में दिक़्क़त आती है। एक दिक़्क़त ये भी है कि हमें पहले ख़ुद बच्चों को ऑनलाइन पढ़ाना सीखना पड़ रहा है। हमने बच्चों को इस तरह से कभी नहीं पढ़ाया था। हमसे ही ग़लतियाँ हो रही हैं, हम ही ठीक से नहीं कर पा रहे हैं तो बच्चा कैसे करेगा। ऐसा भी हो रहा है कि किसी टीचर को पेडगोजी की समझ है, किन्तु उसे तकनीकी का ज्ञान नहीं है तो वो भी आज बच्चों के साथ कुछ कर नहीं पा रहा।

वर्कशीट बनाने में ये सोचना पड़ रहा है कि कई बच्चों को वर्कशीट को स्वयं ही समझकर करना है। वर्कशीट आकर्षक, रुचिकर व बच्चों के स्तर की होंगी, तभी वे वर्कशीट करने को तैयार होंगे। सरल भाषा में अवधारणा प्रस्तुत हो, ताकि पढ़ने और सीखने की रुचि आगे बढ़े, रुके नहीं। वर्कशीट के प्रश्न सीखने में मदद की दृष्टि से हैं न कि मूल्यांकन के लिए। वर्कशीट को हम कई-कई बार संशोधित कर रहे हैं। भाषा भी बदलनी होती है कि यहाँ पर अकेले में बच्चा नहीं समझ पाएगा। इस तरह से हम भी चीज़ें सीख रहे हैं। हम जो प्रयास कर रहे हैं उनमें सबसे अच्छा प्रयास बच्चों के पास वर्कशीट लेकर जाना लग रहा है। बच्चे हमसे मिलकर ख़ुश हैं और जब वो हमारे सामने बैठकर वर्कशीट करते हैं, तो हम समझ पा रहे

हैं कि बच्चे उसे कितना समझ रहे हैं और कैसे कर रहे हैं।

गुरबचन सिंह : मैं छोटेलालजी से अपने अनुभव साझा करने का अनुरोध करूँगा।

छोटेलाल : मेरे बहुत-से अनुभव रश्मिजी से मिलते हैं। इस दौरान हमने 3 क्षेत्रों पर काम किया। पहला, समुदाय के साथ जुड़कर यह जानने की कोशिश कि वो परिस्थिति को कैसे ले रहे हैं और उनकी क्या चुनौतियाँ हैं। दूसरा, स्कूल की टीम के तौर पर ख़ुद के क्षमतासंवर्धन व विकास के लिए हम क्या कर सकते हैं और बच्चों के साथ किस तरह से सम्बन्ध बनाए रख सकते हैं। तीसरा यह था कि हम बच्चों के साथ अकादमिक काम की शुरुआत कैसे कर सकते हैं।

25-26 मार्च को ये स्पष्ट हो गया था कि अब मिलने का या एक जगह इकट्ठा होने का कोई उपाय नहीं है। शुरुआत में बहुत व्यग्रता थी कि अपनी-अपनी जगह सिमटकर भी, हम क्या कर सकते हैं और किस तरह से बच्चों के साथ जुड़ाव बना सकते हैं। फिर समूह में बातचीत शुरू हुई और संस्था के तौर पर भी विमर्श हुआ कि हम घर में रहते हुए किस तरह की चीज़ों पर काम कर सकते हैं। हमने कक्षावार वॉट्सएप ग्रुप बनाना तय किया और निर्धारित किया कि हर ग्रुप को कक्षा शिक्षक देखेगा। शुरुआत में हमने उनके हालचाल, वो किस तरह इस पूरी परिस्थिति को ले रहे हैं, कैसी चुनौतियाँ व दिक़्क़तें उनके सामने हैं, इसके बारे में जानने की कोशिश की और सूचनाओं का आदान-प्रदान भी किया। हमने कक्षावार यह डेटा जुटाने की भी कोशिश की कि उस क्षेत्र में ऐसे कितने परिवार हैं जिनको खाने-पीने की दिक़्क़त हो रही है। ऐसे परिवारों को हमने खाने के पैकेट भिजवाने शुरू किए। फिर हमने वॉट्सएप पर कुछ वीडियो और कुछ ऐसी छोटी-छोटी चीज़ें भेजीं जो बच्चे देख सकते हैं, सुन सकते हैं, उसपर कुछ प्रतिक्रिया दे सकते हैं। साथ ही वर्कशीट देने का काम भी शुरू किया। पर 40-45% बच्चे ही इसको एक्सेस कर रहे थे और सिर्फ़ 15% बच्चों के ही जवाब हमें मिल रहे थे। बच्चों के साथ वॉट्सएप के ज़रिए शुरू हुई गतिविधियाँ ज़्यादा प्रभावी नहीं थीं। फ़ाउण्डेशन के स्तर पर भी बातचीत शुरू हुई कि वॉट्सएप और ऑनलाइन के ज़रिए बच्चों के साथ बहुत काम नहीं हो सकता क्योंकि बच्चों के पास आवश्यक सुविधाएँ नहीं हैं। अतः बच्चों के स्तर अनुसार विषयों की वर्कशीट पर काम करना शुरू किया गया।

इसके लिए विषयों में कक्षा के हिसाब से बच्चों के स्तर को वर्गीकृत करने की कोशिश हुई। जब वर्कशीटों को समुदाय में ले गए और बच्चों के घरों पर पहुँचे तो ज़बरदस्त अनुभव हुआ क्योंकि हम बच्चों के अभिभावकों से क़रीब 2 माह बाद मिल रहे थे। बच्चे और अभिभावक

फोटो : अरविंद शर्मा, अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन

काफ़ी उत्साहित दिखे व इसे काफ़ी सकारात्मक रूप से लिया और सहयोग किया। जब वर्कशीट पर जवाबों को इकट्ठा किया तो हमने पाया कि 50% बच्चे ही उनको सकारात्मक रूप में लेकर अच्छे-से कर पा रहे थे। हमने वर्कशीट की पूरी विषय वस्तु, उसमें दिए गए अभ्यासों का रिव्यू किया और फिर से वर्कशीट बनाई। अब हमें पता था कि कौन-सा बच्चा किस स्तर पर कौन-सी चीज़ें समझ पा रहा है और कहाँ जूझ रहा है। इस दूसरे चरण में बनी वर्कशीटें बच्चों को पहुँचाईं और तब उनका भी रिव्यू किया, तब हमें लगा कि पहले चरण की तुलना में दूसरे चरण में बच्चों की प्रतिक्रियाएँ काफ़ी अच्छी हैं।

हमने अभिभावकों के साथ भी बात की कि आप बच्चों को समय दीजिए, उन्हें दिक़्क़तें है तो सहयोग भी कीजिए। इस बार बड़े भाई-बहन या माता-पिता जो कुछ पढ़े-लिखे थे, वो उनके साथ उस काम में जुड़े। अबकी बार 80% बच्चों ने वर्कशीटें लौटाईं। इस वर्कशीट का भी हमने रिव्यू किया। हमने तय किया कि हमें रणनीति को और बदलना चाहिए और सोचा कि बच्चों के साथ मिलकर काम करने के और क्या तरीक़े हो सकते हैं। पूरे विमर्श की प्रक्रिया में यह समझ बनी कि कुछ छोटे पॉकेट बनाकर 10-12 बच्चों के साथ काम करें। यह भी देखने की कोशिश की कि टीम के रूप में हमारी सामर्थ्य क्या है? हम कितने पॉकेट में जा सकते हैं? पहली और दूसरी कक्षा के बच्चों के अलग-अलग पॉकेट

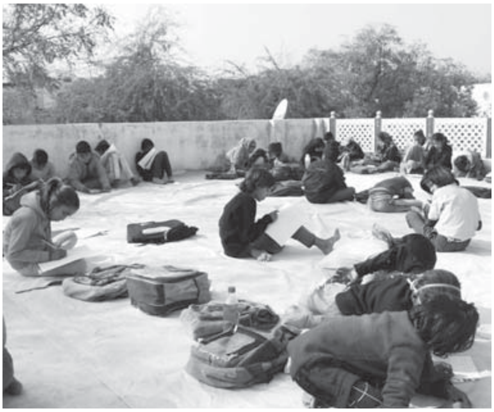

फोटो : छोटेलाल तंवर, अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन

बनाए और पहली व दूसरी के शिक्षक को उन बच्चों के लिए योजना बनाने की ज़िम्मेदारी दी कि समय निकालकर उनके साथ काम करें। तीसरी से आठवीं तक के 12 पॉकेट और 6 टीमें बनाईं। हर पॉकेट में 2-2 लोगों को ज़िम्मेदारी दी गई और तब से हम लोग उस काम को कर रहे हैं। यह तय किया गया था कि बच्चों के साथ पुस्तकालय की किताबों पर भी काम करेंगे और देखेंगे कि किस तरह से इस काम को आगे ले जाया सकता है। यह भी तय किया गया कि भाषा में पढ़ने-लिखने पर और गणित के बुनियादी क्षेत्रों पर काम करेंगे। लिखने में बच्चे अपने रोज़मर्रा के अनुभवों को लिखें। साथ ही बच्चे पढ़ने के बाद सवाल बनाएँ, उनके रोज़मर्रा के अवलोकन को लेकर सवाल बनाएँ, गणित से जुड़े सवाल बनाएँ, वह भी रोज़मर्रा के अनुभवों पर, जैसे– उनके माता-पिता के ख़र्चों का विवरण, उनकी आय का विवरण, उनपर कुछ सवाल बना सकते हैं। ऐसी कुछ बुनियादी चीज़ें निर्धारित कीं। इस पूरे काम का कोर क्षेत्र यह था कि रोज़ टीम के साथ एक-डेढ़ घण्टा पूरे दिन के काम पर बात करते रहें, जैसे– किस पॉकेट में शिक्षक किस हिस्से / मुद्दे पर काम कर रहे हैं, किस तरह की प्रतिक्रिया आ रही है, किस तरह की चुनौती का सामना वो कर रहे हैं। इस पूरी प्रक्रिया में हम अपनी रणनीति में लगातार बदलाव करते रहे, चीज़ों पर रिफ़्लेक्ट करते रहे और ज़रूरत के हिसाब से नई चीज़ें जोड़ते रहे। पहली और दूसरी के क़रीब 18-20 बच्चे शहरी क्षेत्र से थे। इनको हमें स्कूल के दाख़िले के लिए लेना था, पर वो जिस क्षेत्र में थे उसका फैलाव ज़्यादा था। हमने यह तय किया कि इन बच्चों के साथ वर्कशीट पर काम करेंगे। इनसे हम सप्ताहवार मिलेंगे और अभिभावकों को इसकी ज़िम्मेदारी देंगे। इस पूरी प्रक्रिया की उपलब्धियाँ यह हैं कि हम ज़्यादा-से-ज़्यादा बच्चों के साथ जुड़ने और लगातार काम करने में सफल रहे। वे बच्चे जो दूर के क्षेत्रों से थे, उनके साथ भाषा और गणित के बुनियादी क्षेत्रों पर काम किया। बच्चों को पाठ्यपुस्तकें और स्टेशनरी भी उपलब्ध कराई। धीरे-धीरे हम विषयों के अभ्यासों की तरफ़ बढ़े, हर विषय में व्यापक विषय वस्तु ली जो कक्षा 6, 7, 8 में होती है। थीम और प्रोजेक्ट पर भी हमने काम किया, जैसे– इतिहास में हमारे एक साथी ने गाँव के कुछ ख़ास स्थलों को जानने के लिए एक पूरा प्रोजेक्ट बनाया। गणित में कुछ मॉडलों और प्रोजेक्ट पर काम किया। लगातार बच्चों को कहानी सुनाना, उनपर बात करना, बच्चों के द्वारा कहानी सुनना-सुनाने पर भी काम हुआ। अन्त में, एक बात और कहूँगा कि कोविड जागरूकता शिविर में हमारे पुराने विद्यार्थियों के साथ गाँव में जागरूकता उत्पन्न करने के लिए लगातार काम किया गया। अलग-अलग तरीक़ों

से 30 से 40 बच्चों का समूह हर शनिवार को गाँव के लोगों के साथ गतिविधि के माध्यम से जुड़ता है। लगता है ये बच्चे अपने-आप को एक बदलाव लाने वाले की भूमिका में देखते हैं और बहुत उत्साह से इस पूरे अभियान में जुटे हुए हैं।

रजनी : मैं अनूपजी से गुज़ारिश करूँगी कि वो अपनी बात रखें।

अनूप : कमोबेश स्थितियाँ सब जगह एक जैसी ही हैं। स्कूल बन्द होने का प्रभाव शुरू में बच्चों के लिए बहुत ख़ुशनुमा था, लेकिन धीरे-धीरे छुट्टियों का दौर लम्बा होने लगा और उन्हें बोर भी करने लगा। जब स्कूल बन्द हुए तो अन्दाज़ा था कि ये दौर काफ़ी लम्बा खिंचने वाला है और शायद स्थितियाँ और भी गम्भीर होने वाली हैं। सरकार के स्तर पर भी बच्चों को शिक्षा से जोड़े रखने के प्रयास होने लगे थे। इन सभी के मद्देनज़र हमें अपनी तैयारी करनी थी। शिक्षा को जारी रखने के लिए राज्य सरकार की तरफ़ से 'पढ़ई तुंहर दुआर' नाम के एक पोर्टल का निर्माण किया गया, जिसके ज़रिए शिक्षकों को बच्चों से ऑनलाइन मिलना था। ग्रामीण अंचल में कनेक्टिविटी को लेकर बहुत दिक़्क़तें हैं, अतः कहीं-न-कहीं ये सारी चीज़ें असफल रहीं। हालाँकि हमारा स्कूल नगरीय है और अँग्रेज़ी माध्यम का है। तीन वर्ष पहले यह सरकार की योजना से खोला गया है। यहाँ पर आसपास के क़रीब 15 किलोमीटर के क्षेत्र से बच्चे आते हैं।

यहाँ बच्चे ऑनलाइन माध्यम से जुड़ रहे थे। हमारे स्कूल के अभिभावक थोड़े जागरूक भी हैं, क्योंकि ज़्यादातर बच्चे प्राइवेट स्कूल से निकलकर ही यहाँ आए हैं। जब हमने ऑनलाइन क्लास लेनी शुरू की तो शुरुआत में, जैसा रश्मिजी ने कहा था, हमें भी काफ़ी सीखना पड़ा। शुरुआती एक-दो माह 15-20 बच्चे ही जुड़ पाते थे। हम लोग हतोत्साहित भी हुए। ऐसा लग रहा था कि चीज़ें नहीं हो पा रही हैं। इसी बीच राज्य सरकार की तरफ़ से 'सीख' कार्यक्रम की योजना ज़िला स्तर पर प्रारम्भ हुई। 'सीख' कार्यक्रम के तहत जिन जगहों पर बच्चे ऑनलाइन माध्यम से नहीं जुड़ पा रहे हैं, वहाँ हमें अपने स्कूल के 10 बच्चों के लिए उन्हीं के मोहल्ले से 1-1 वॉलंटियर खोजना था। हमारे क्षेत्र का फैलाव बहुत ज़्यादा था। हमने योजना बनाई कि हम पालकों से बात करें और उनको ही सक्रिय वॉलंटियर के तौर पर देखें। हमने पालकों से बात की और लगभग 10-15 पालक सक्रिय रूप से काम करने के लिए तैयार हुए। कुछ पालक आसपास के बच्चों को अपने पास ही पढ़ाते हैं। कुछ पालक अपने बच्चों को पढ़ा रहे हैं। यह हमारे लिए काफ़ी अच्छा रहा। हमें दिक़्क़त उन बच्चों के साथ आई जहाँ पालकों के साथ हमारी बात नहीं हो पाई, और जो दूरदराज़ के क्षेत्रों से हैं और उनके अभिभावक उनको मदद नहीं कर पा रहे थे। उन अभिभावकों को हमने जोड़ने की कोशिश की। उन्हें इस बात के लिए राज़ी किया कि उनके गाँव में 'सीख' कार्यक्रम के अन्तर्गत कुछ वॉलंटियर्स कक्षाएँ ले रहे हैं और वे अपने बच्चों को वहाँ भेजें। हालाँकि उनकी पढ़ाई कैसी चल रही होगी यह हम लगातार नहीं देख पाए। मगर कभी टेलीफ़ोन पर बात होती है तो वो बताते हैं कि वे बच्चों को स्कूल भेज रहे हैं। 'सीख' कार्यक्रम, यूनिसेफ़ के साथ एक साझा प्रयास है। यूनिसेफ़ की टीम विषय वस्तु तैयार करती है और वही विषय वस्तु ऑनलाइन भी होती है। हमने 'सीख' द्वारा विकसित विषय वस्तु के लिए अलग से वॉट्सएप ग्रुप बना दिया और स्कूल वॉट्सएप ग्रुप पहले से था ही। जितने बच्चे जुड़

फोटो : मनीषा यादव, एकलव्य फ़ाउण्डेशन

रहे हैं उनके लिए हमारी ऑनलाइन क्लास शुरू रही। जो बच्चे ऑनलाइन कक्षा से नहीं जुड़ पा रहे हैं उनके लिए ऑफ़लाइन वीडियो बनाए। उन्हें यू-ट्यूब में अपलोड कर उनके लिंक बच्चों से साझा किए। यू-ट्यूब पर बड़ी फ़ाइलें भी चली जाती हैं और जहाँ कनेक्टिविटी है वहाँ लिंक खोलकर देख सकते हैं। छोटी अवधि की स्लाइडें / वीडियो बनाए और कोशिश की कि मैं उसमें एक पूरी-की-पूरी प्रक्रिया डाल सकूँ। स्लाइडों में एक गतिविधि उदाहरण के तौर पर होती है, एक अभ्यास के लिए और एक हिस्से में मूल्यांकन की बात आती है। यह तीनों मैंने 16-17 मिनट में पिरोने की कोशिश की। बच्चे स्लाइडें और दी गई वर्कशीट हल कर भेजते हैं, कुछ बच्चे स्लाइडों

फोटो : गोलू , एकलव्य फ़ाउण्डेशन

में दी गई सामग्री को कॉपी करते हैं, और कुछ अभिभावक प्रिंटआउट निकालकर भी दे देते हैं।

रजनी : मुनीर आप अब अपनी बात रख सकते हैं।

फोटो : विनोद उप्रेती

मुनीर : हम समुदाय में मौजूद संसाधनों को पहचानने और उनका उपयोग करने पर फ़ोकस कर रहे हैं। जैसे एक गाँव की शिक्षिका द्वारा कॉलेज के विद्यार्थी या अन्य शिक्षित व्यक्तियों को पहचानना। यह प्रक्रिया जिसके बारे में रश्मिजी और बाक़ी लोगों ने बात की, इस पूरी प्रक्रिया के बेहतर क्रियान्वयन के लिए गाँव के संसाधनों को पहचान कर उनकी मदद लेना बहुत ज़रूरी है और पिथौरागढ़ में ऐसा ही हो रहा है। उत्तराखंड में प्रत्येक इंटर कॉलेज के दायरे में 4-5 गाँव आते हैं जिसमें 2-3 प्राथमिक शालाएँ आती हैं। इंटर कॉलेज के शिक्षक को हर गाँव के लिए एक मेंटर तय करना है। इसके लिए ये शिक्षक गाँव के प्राथमिक स्कूल के शिक्षक के साथ समन्वय करते हुए गाँव में उपलब्ध संसाधनों को जानने की कोशिश करते हैं। वे यह कोशिश करते हैं कि वॉलंटियर्स को कैसे जोड़ा जाए। दूसरा, प्रत्येक इंटर कॉलेज अपने क्षेत्र को एक समूह के रूप में देखने की कोशिश करे और अपना कुछ ऑपरेशन डिज़ाइन करे। ये दो चीज़ें यहाँ पिथौरागढ़ में ज़मीनी स्तर पर हो रही हैं।

रजनी: अब मैं टुलटुलजी से बात करने की गुज़ारिश करूँगी।

टुलटुल : काफ़ी चीज़ें साथियों ने जो साझा कीं उससे मिलती-जुलती हैं। हम लोग अलग-अलग जगहों पर कोशिश करते रहे हैं; महाराष्ट्र के कुछ इलाक़े हैं, और मध्य प्रदेश के छह ज़िलों में हम काम करते हैं। जब लॉकडाउन हुआ और स्कूल बन्द हुए तो लगा कि स्कूल अब 3-4 महीने तक नहीं खुलेंगे, पर धीरे-धीरे वो और आगे बढ़ता गया। हमने तीन तरह के प्रयास शुरू किए लेकिन हम यहाँ दो की ज़्यादा बात करेंगे। एक, शिक्षकों के साथ सम्पर्क और बातचीत को लगातार बनाए रखने की कोशिश की। दूसरा, अलग-अलग इलाक़ों में, बच्चे इस दौर में क्या कर रहे हैं उसको जानने-समझने की कोशिश की, और तीसरा हमारी टीमों के क्षमतावर्धन के लिए हर दिन कुछ पढ़ना और तैयारी करना। जब ये जानने की कोशिश की कि

गाँव के हमारे शिक्षा प्रोत्साहन केन्द्र जो हमारे स्थानीय युवा शैक्षणिक मदद के लिए चलाते हैं वहाँ पर आने वाले बच्चे क्या कर रहे हैं, तो हिला देने वाली तस्वीर हमारे सामने आई। आप जानते हैं कि सरकारी स्कूल में आर्थिक और सामाजिक रूप से एकदम हाशिए पर जो परिवार हैं उनके बच्चे आते हैं।

ऐसे परिवारों का रोज़गार छिनना सबसे पहले हुआ और उसका असर सीधे-सीधे बच्चों के ऊपर भी आया। बहुत सारे बच्चे जो शिक्षा प्रोत्साहन केन्द्र में आते थे, वो हमें काम करते हुए नज़र आए; दो बच्चे चूड़ी की दुकान लगा रहे हैं, परचूनी की दुकान में बच्चे काम कर रहे हैं, बढ़ईगीरी का काम बच्चे अपने ही घर में कर रहे हैं, और खेतों में भी काम कर रहे हैं। ये सच्चाई सामने आई कि कुछ समय के लिए घर में अगर एक विषम परिस्थिति है, आर्थिक परिस्थितियों की वजह से बहुत ही तनावपूर्ण माहौल बन रहा है तो थोड़ी देर के लिए स्कूल बच्चों को वो जगह भी देता था जो बच्चों को उस परिस्थिति से निजात दे, वो एकदम छिन गया।

शिक्षा में हम इन तीन दायरों को हमेशा देखते हैं– परिवार का दायरा, समुदाय का दायरा और स्कूल व शिक्षकों का दायरा। इन तीनों दायरों के आदान-प्रदान को देखते हुए हम इस दौरान शिक्षा के बारे में क्या कर पाए, उसकी बात करें तो शुरुआती चरण में बच्चों के साथ ज़्यादा इंगेजमेंट नहीं हो पा रहा था। लेकिन शिक्षकों के साथ हमारी बातचीत लगातार होती रही। इस बातचीत में कई सारे मुद्दे निकलकर आए। एक महत्त्वपूर्ण मुद्दा था कि कई शिक्षकों को कोविड सम्बन्धी ज़िम्मेदारियाँ भी दी गई थीं, जैसे– क्वारंटाइन सेंटर की ज़िम्मेदारियाँ, जो परिवार पलायन से लौट रहे थे उनका सर्वे, और उन्हें राशन की स्कीम से जोड़ना आदि। इसके अलावा कुछ समूह में बच्चों की ज़िम्मेदारी, उनके साथ फ़ोन पर सम्पर्क करना और ऑनलाइन पढ़ाई का फ़ॉलोअप करना तो था ही। शिक्षकों की बातचीत से एक और चीज़ समझ में आई कि क्वारंटाइन सेंटर या सर्वे के जब काम किए जा रहे थे तो शिक्षकों के पास कोई ख़ास सुरक्षा उपाय नहीं थे। ये भी एक महत्त्वपूर्ण मुद्दा है कि शिक्षकों की कई कामों में मदद ली जाती है, लेकिन उनकी अपनी तैयारी और उनके बचाव की तैयारी में ये चीज़ें छूट जाती हैं। दूसरा, जब हमने अपने शिक्षकों के साथ हमारी टीम की आन्तरिक अधिगम प्रक्रियाओं के बारे में साझा किया तो सभी शिक्षकों ने रुचि दिखाई। तब उनकी रुचि के अनुसार पढ़ने की सामग्री उनको भेजी गई।

कई शिक्षकों ने सामग्री पर टिप्पणियाँ लिखकर भेजीं जिसे न्यूज़लेटर के रूप में निकालकर सब शिक्षकों से साझा किया गया। कई शिक्षकों ने ऑनलाइन कक्षा में जुड़ने की बात कही, और फिर कुछ शिक्षकों के साथ गूगल मीट / ज़ूम के द्वारा शैक्षिक सत्र और क्षमतावर्धन के सत्र आयोजित होने लगे। इस चरण में एक और चीज़ पर हमने ध्यान दिया। मध्य प्रदेश सरकार डिजिटल लर्निंग इनहान्समेंट प्रोग्राम (DigiLEP– डिजिलैप) के नाम से काफ़ी सारी सामग्री बच्चों एवं शिक्षकों को भेज रही थी। यहाँ भी स्मार्टफ़ोन की उपलब्धता लगभग 25-30% अभिभावकों के पास ही है। शिक्षकों के साथ अपनी बातचीत से हमने समझा कि 8-10% बच्चों से ही उनका संवाद हो पा रहा है। राज्य शिक्षा केन्द्र का अपना आकलन है कि लगभग

फोटो : आकाश मालवीय, एकलव्य फ़ाउण्डेशन

2% बच्चे ही इससे लाभ ले पा रहे हैं, और सार्थक रूप से इंगेज हो पा रहे हैं। हमें लगा कि ऐसी सामग्री बनाने की ज़रूरत है जो सामान्य फ़ोन या रेडियो के ज़रिए भी बच्चों तक पहुँच सके। हमने कुछ ऑडियो कहानियाँ और ऑडियो पाठ बनाने का काम किया और इसे राज्य शिक्षा केन्द्र के साथ साझा भी किया। रेडियो प्रोग्राम के लिए रेडियो स्क्रिप्ट और कुछ वर्कशीट भी बनाईं। वर्कशीट में बच्चों के जीवन से जोड़ते हुए भाषा और गणित के साथ ही हमने यह प्रयास किया कि कोविड से बच्चे कैसे जुड़ रहे हैं, उसको कैसे देख रहे हैं, उसके बारे में उनके मन में क्या कुलबुला रहा है, उसकी अभिव्यक्ति भी हो पाए, इसपर भी वर्कशीट श्रृंखला बनाई। यह पर्यावरण अध्ययन के दायरे से भी जुड़ता है। उसमें कई भावनात्मक पहलुओं पर भी बात

फोटो : युगल किशोर, एकलव्य फ़ाउण्डेशन

हुई कि इस दौर के तनाव में बच्चे ख़ुद को कैसे सँभालें? इन सारी चीज़ों को हमने राज्य शिक्षा केन्द्र के साथ साझा किया ताकि पूरे राज्य के बच्चों तक वो पहुँचाई जा सकें और इसी संवाद के दौर में हमने राज्य शिक्षा केन्द्र के साथ मिलकर 'हमारा घर हमारा विद्यालय' मुहिम चलाई। उसकी संकल्पना करना, डिटेल्स को तैयार करना; वो कैसे काम करेगा, किस तरह की शिड्यूलिंग होने की ज़रूरत है, ये सारी बातचीत होती रही। शिक्षकों के शिक्षकीय सफ़र को दर्ज करने के लिए कुछ लम्बे साक्षात्कार लेने के प्रयास किए। इस बीच हमने फ़ोन के माध्यम से ही इसकी सरलता बढ़ाई। बच्चों के साथ ऑडियो कहानियाँ और इस तरह की सामग्री के प्रचार-प्रसार के अलावा, कोविड के बारे में, उसके बचाव के तरीक़ों के बारे में जानकारी पर भी लगातार बच्चों, शिक्षकों और जो युवा सदस्य हमारे साथ पुस्तकालय कार्य से जुड़े हैं, उनके साथ चर्चा व संवाद होता रहा। जैसे छोटेलालजी पॉकेट्स के बारे में बात कर रहे थे, लगभग उसी तरह की चीज़ हमने भी सोची। ऐसी जगह जहाँ बच्चे छोटे समूह में आकर मिल सकते हैं, एक दूसरे के साथ छोटी-छोटी गतिविधियाँ कर सकते हैं, आपस की बातें साझा कर सकते हैं और कुछ सीख भी सकते हैं। इसको 'मोहल्ला शिक्षा गतिविधि केन्द्र' का नाम दिया। राज्य शिक्षा केन्द्र ने इसे मोहल्ला कक्षा के रूप में और अपने पूरे कार्यक्रम और कार्यवाही के तहत आगे बढ़ाया। मोहल्ला शिक्षा गतिविधि केन्द्र की संकल्पना इसी तरह हुई कि हर मोहल्ले में उसी मोहल्ले के बच्चे और उसी मोहल्ले के कोई युवा या किशोर साथी पढ़े-लिखे हों और जो बच्चों को पढ़ाना चाहते हैं, वो आगे आएँ। ये केन्द्र खुली और हवादार जगह पर संचालित हों, बच्चों की आसान पहुँच में हों, मोहल्ले के अन्दर हों, बाहर से कोई नहीं आए और उसी मोहल्ले के व्यक्ति ही पढ़ाने का काम करें। जो साथी पढ़ाने का काम कर रहे हैं, एकलव्य की टीम और उस गाँव के स्थानीय शिक्षक की मदद से हर सप्ताह शनिवार या रविवार के दिन उनका 2 घण्टे की तैयारी का सत्र होता है। जब कुछ जगहों पर धारा 144 लगा दी गई, तो यह तय किया गया कि बच्चों को एक घण्टे के लिए ही बुलाएँ। यहाँ भी सुरक्षा के उपाय जो कोविड की परिस्थिति में सबसे महत्त्वपूर्ण हैं, इनपर पढ़ाने वाले युवा साथियों और बच्चों के साथ लगातार बहुत संवाद हुआ। मास्क पहनना, मास्क मुहैया कराना, दूर-दूर बैठना, आते और जाते समय साबुन से हाथ धोना, इन चीज़ों को एक कवायद की तरह लगातार बातचीत करके अभ्यास में लाया गया। हम इसको इस तरह भी देख रहे थे कि बच्चे इन चीज़ों को अपने परिवार में सन्देश ले जाने

का भी एक ज़रिया बन रहे थे। इन केन्द्रों पर इस बात पर बहुत ज़्यादा ज़ोर दिया गया कि कैसे स्थानीय संसाधनों का अभी सहजता से उपयोग किया जाए। हम बहुत ही छोटे-से बजट में थोड़ी कहानी की किताबें, कुछ पुराने *चकमक* के अंक, कुछ माचिस की तीली जैसी स्थानीय रूप से मुहैया हो सकने वाली सामग्री के साथ जा रहे थे। सोच यह थी कि युवा साथियों की तैयारी ऐसी हो, जैसा मुनीरजी ने भी कहा कि समुदाय के पास उपलब्ध संसाधनों का उपयोग करते हुए सीखने-सिखाने का काम कर सकें। राज्य शिक्षा केन्द्र ने भी इस विचार को अपनाया और 'हमारा घर हमारा विद्यालय' कैम्पेन की शुरुआत हुई। इसके तहत मोहल्ला कक्षा के बारे में पूरी प्रक्रिया और पूरी व्यवस्था बनाई गई। मध्य प्रदेश में सभी ज़िलों में इसपर प्रशिक्षण भी रखा गया। मोहल्ला कक्षा कैसे संचालित करनी है, उसके लिए क्या व्यवस्थाएँ करनी हैं, शिक्षक की क्या भूमिका है, समुदाय की क्या भूमिका है, इसपर प्रशिक्षण हुए। अगर समेटते हुए देखें तो जो मुख्य बातें दिखती हैं वो एक यह कि शिक्षा के जो भी काम हैं उसमें समुदाय और अभिभावकों की एक अनिवार्य भागीदारी हो, ये इस दौर में बहुत ही मुख्य रूप से सामने रखा गया है।

स्थानीय युवाओं को शिक्षा के दायरे से जोड़ने की सम्भावनाओं को लेकर जो प्रयास हम करते रहे थे उन अनुभवों ने इस दौर में बहुत मदद की। हाई स्कूल में पढ़ने वाले किशोर या कॉलेज में पढ़ने वाले युवा अपने-अपने गाँव लौटे हैं, क्योंकि शहरों में हालात ज़्यादा ख़राब हैं तो वो गाँव में ही बने हुए हैं। कुछ भी पहल करने के लिए उनकी मदद ली जा सकती है। तीसरी महत्त्वपूर्ण चीज़ जो बहस का मुद्दा भी है, वो ऑनलाइन शिक्षा की सीमाएँ हैं। ऑनलाइन का प्रयास हमने भी किया और अभी भी कर रहे हैं, उसमें दो तरह की बातें हैं। जैसा रश्मि मैडम कह रही थीं कि वर्कशीट को लेकर बच्चों के साथ प्रत्यक्ष संवाद की एक अलग ही सार्थकता नज़र आती है। ऑनलाइन माध्यम में इंटरेक्टिव होने की सम्भावनाएँ हैं, लेकिन अधिकतर सामग्री वैसी नहीं बन रही है। हम 'टेसू' नाम के प्लेटफ़ॉर्म की मदद से कोशिश कर रहे हैं। इसमें ऐसे मॉड्यूल उपयोग हो रहे हैं जिसमें बच्चे काम करते हैं, ग़लतियाँ करते हैं, फिर देखते हैं कि ग़लती हो गई है तो उसपर दोबारा काम करते हैं और ग़लती से सीखते हुए आगे बढ़ते हैं। हम इसे आजमा रहे हैं। लेकिन ये सबकी पहुँच में नहीं है। मुझे शिद्दत से लगता है कि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का एक अनिवार्य हिस्सा ये होना होगा कि वो सबके लिए मुहैया हो। अन्तिम बात ये कि मोहल्ला केन्द्र / पॉकेट्स में काम करने की बात बार-बार हमें याद दिलाती है कि बहुत सारी और चीज़ों में ग्राम स्वराज क़िस्म की कल्पना की तर्ज पर स्थानीय छोटी इकाई में काम होना, इनको जगह देना, इनको बड़ी संख्या में पनपाना और इस तरह से तैयार करना कि वो स्वावलम्बी हो सकें, इस दिशा में और ज़्यादा सोच विचार करने की और काम करने की ज़रूरत लगती है।

फोटो : अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन

रजनी : अभिषेक, अब आप अपनी बात कहें।

अभिषेक : मध्य प्रदेश में किस तरह का काम हुआ है, इसके बारे में टुलटुलजी ने बताया। मैं इसमें कुछ जोड़ना चाहूँगा। लॉकडाउन के दौरान मध्य प्रदेश सरकार ने दो तरह के काम किए। पहला, शिक्षकों से जुड़े रहने के लिए 2-2, 3-3 घण्टे के कुछ सेल्फ़ प्रैक्टिस कोर्सेस उन्होंने बनाए। दूसरा, बच्चों के लिए डिजिलैप शुरू हुआ। इसमें वॉट्सएप पर सीखने-सिखाने की विषय वस्तु को भेजना शुरू किया गया। अप्रैल

के बाद पता लगा कि डिजिलैप कार्यक्रम की पहुँच सिर्फ़ दो प्रतिशत बच्चों तक है। इसी बीच कई संस्थाओं ने सरकार को चिट्ठियाँ भेजीं कि एक ब्लैंडेड मोड अप्रोच के तहत काम करने की ज़रूरत है।

तब 'हमारा घर हमारा विद्यालय' कार्यक्रम शुरू हुआ। इसके तहत सभी शिक्षकों को मोहल्ला कक्षाओं में जाना और 5-5 बच्चों की टोलियों के साथ काम करना है। हर सप्ताह जारी एक कैलेंडर के अनुसार ये सारा काम होता है। अध्यापकों को 4 घण्टे काम करना होता है। छतीसगढ़ में 'पढ़ई तुंहर दुआर' कार्यक्रम है

फोटो : अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन

लेकिन इसमें शिक्षकों का जाना वॉलंटरी हैं, हो सकता है कि सन्दर्भ अलग हो। मध्य प्रदेश में ऑनलाइन कक्षा का काम दो-तीन अलग संस्थाओं द्वारा किया जा रहा था और तीन चीज़ें चल रही थीं। एक, वॉट्सएप के द्वारा विषय वस्तु को भेजना और बच्चों को कहना कि ये करके भेजिए; दूसरा, किसी एप को इंस्टॉल कर लेना या उनके साथ कोई क़रार कर लेना और उसके ऊपर काम करवाना; और तीसरा, ज़ूम या माइक्रोसॉफ़्ट के ज़रिए फेस टू फेस काम। ऑनलाइन के इस्तेमाल की सम्भावनाएँ हैं– आप एक अच्छी कहानी को ऑनलाइन रिसोर्स में परिवर्तित कर सकते हैं और बच्चे देख सकते हैं या ऑनलाइन ऑडियो भेज सकते हैं।

लेकिन शिक्षा ऑनलाइन ही होने लगे उसमें काफ़ी समस्याएँ हैं। एक समस्या ये आई कि ऑनलाइन प्रक्रिया में ज़्यादा काम सिर्फ़ सुनने का होता है, बच्चे क्या कर रहे हैं, समझ रहे हैं, नहीं समझ रहे हैं, यह बिलकुल समझ में नहीं आता है। अध्यापक भी काफ़ी हतोत्साहित हैं और अभिभावक भी, क्योंकि कई बार वे बच्चे की मदद नहीं कर पाते। इसमें ज़्यादा परेशानी बच्चों को हो रही है। लेकिन अब यह समझ आ गया है कि इसका सीमित उपयोग ही हो सकता है। शिक्षा की प्रक्रिया में जिस आत्मीयता, अन्तःक्रिया की ज़रूरत है वो इस माध्यम में नहीं हो सकती।

दूसरा, जब ये आदेश आया कि शिक्षकों को काम पर जाना है तब तय था कि शिक्षा में, अध्यापकों के साथ काम करने वाली संस्थाओं को भी काम करना होगा। तो एक विमर्श यह था कि हम लोगों के कर्तव्यों को किस तरह से परिभाषित करें। यह महत्त्वपूर्ण है क्योंकि बहुत-से लोग फ़ील्ड में जाने से डरे हुए थे। उन्होंने संस्था में काम करना इसलिए तय नहीं किया था कि ऐसी परिस्थिति में जहाँ जान को ख़तरा हो, तब भी फ़ील्ड में जाकर काम करना हो। ये समस्या सिर्फ़ फ़ाउण्डेशन में काम कर रहे लोगों की या सिर्फ़ शिक्षकों की नहीं है, ये समस्या पुलिस वालों की भी है।

कोई व्यक्ति जब किसी काम को करने के लिए तैयार होता है, चाहे शिक्षक हों, पुलिस वाले हों, डॉक्टर हों, उनके उस पेशे को अपनाने में यह तय होता है कि ज़िम्मेदारियाँ सन्दर्भ के अनुसार बदलती रहेंगी। क्योंकि काम का सन्दर्भ कभी भी बदल सकता है और बदलते सन्दर्भों का अर्थ यह नहीं है कि हम अपनी

ज़िम्मेदारियों से पीछे हट जाएँ। अतः शिक्षकों को या फ़ाउण्डेशन के सदस्यों को फ़ील्ड में जाना चाहिए या नहीं जाना चाहिए, यह एक विमर्श का मसला है। कितना ख़तरा एक व्यक्ति को लेना चाहिए या नहीं, या शासन को ऐसा आदेश निकालना चाहिए या नहीं, ये नैतिक मसला है और मेरी समझ में ये नैतिक ज़िम्मेदारी बनती है कि हम सुरक्षा के सभी उपायों को ध्यान में रखते हुए काम को जारी रखें। क्योंकि समाज के बाक़ी वर्ग; दूध वाला, सब्ज़ी वाला, किराने वाला आदि सभी दुकान बन्द कर दें, तो क्या हो? तब पूरा सामाजिक ताना-बाना जो इसी नैतिकता के ऊपर टिका हुआ है, वो शायद नहीं रहेगा। तीसरा मसला यह है कि कोविड के दौर में कितने वॉलंटियर्स को लेकर काम कर सकते हैं। जो काम हमने किया है उसमें बहुत सारी चीज़ें टुलटुल ने कही हैं, वैसी हैं। यहाँ मध्य प्रदेश में हम सागर, खरगौन, भोपाल और धार, इन चार ज़िलों के अन्दर प्रमुख रूप से काम कर रहे हैं और लगभग पाँच हज़ार शिक्षकों के साथ जुड़े हुए हैं। इनमें से लगभग एक हज़ार शिक्षकों के साथ 'लर्निंग सेंटर' के माध्यम से ज़्यादा सघन रूप से काम कर रहे हैं। लॉकडाउन के दौरान हम इन सभी एक हज़ार शिक्षकों के साथ जुड़े रहे। कुछ काम पहले से योजना में थे, वो टी-कोन और माइक्रोसॉफ़्ट टीम्स के ज़रिए हुए। शुरुआत में कुछ चर्चाएँ और कार्यशालाएँ कोविड को समझने पर हुईं, उसके बाद भाषा और गणित पर।

जब लॉकडाउन हुआ तब पहला सवाल यही आया कि बच्चे इस दौरान क्या कर रहे हैं। दूसरा, हमने शिक्षकों के साथ मिलकर जहाँ भी राशन की आवश्यकता है वहाँ पहुँचाना, ऐसा काम भी किया और इस तरह हम बच्चों तक भी पहुँच पाए। हमारे ज़्यादातर शिक्षकों के साथ 'झोला पुस्तकालय' भी चलते हैं। हमने कोशिश की कि झोला पुस्तकालय की पुस्तकें बच्चे के पास के घर तक पहुँच जाएँ। राशन के साथ किसी तरह से किताबें भी पहुँच जाएँ। जब लॉकडाउन ख़त्म हुआ, 'हमारा घर हमारा विद्यालय' शुरू हुआ तो काम थोड़ा बदल गया। लेकिन हम 60-65% शिक्षकों के साथ सघन रूप से 'हमारा घर हमारा विद्यालय' में काम कर पाए। इस काम के लिए हर सप्ताह सभी विकासखण्डों की टीम के साथ माइक्रोसॉफ़्ट टीम्स पर मिलकर एक साप्ताहिक योजना बनती है। शिक्षकों ने गाँव के अन्दर कुछ वॉलंटियर्स, जो उच्च कक्षाओं में पढ़ने वाले बच्चे होते हैं, को जोड़ने का काम किया। अध्यापक वॉलंटियर्स के साथ योजना बनाते हैं और फिर वॉलंटियर्स बच्चों के साथ छोटे समूहों में काम करते हैं। मैं सागर के पास एक स्कूल रीछोड़ टाबरा गया था।

फोटो : सुरज्ञान गुर्जर, अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन

यह अनुभव हुआ कि योजना बनाने वाला और वॉलंटियर्स के साथ काम करने वाला हिस्सा बहुत महत्त्वपूर्ण है। यह भी समझ आया कि वर्कशीट के अलावा काफ़ी प्रोजेक्ट्स भी बच्चों के लिए किए जा सकते हैं। उदाहरण के लिए, बच्चे टॉफ़ी के रेपर इकट्ठा करें और उनके नाम लिखें क्योंकि ज़्यादातर नाम उच्चारित किए जा सकते हैं या लिखे रहते हैं, फिर अध्यापक के साथ उनपर बातचीत करें।

यह भी समझ आया कि ऐसी स्थिति में गाँव वाले और बड़े बच्चे मदद करने को तैयार हैं। मैं जिन गाँवों के स्कूलों में जा पाया हूँ उनमें शिक्षकों के साथ वॉलंटियर्स में लड़कियों की संख्या ज़्यादा है। उनके साथ बातचीत में उन्होंने बताया कि ऐसे समय में लोगों की मदद करनी चाहिए। एक और बात यह कि शिक्षक के बारे में, गाँव को लेकर हमारी जो मान्यताएँ हैं उसपर भी काम की बेहतरी निर्भर करती है। यदि हमारा विश्वास है कि शिक्षक एक सोचने-समझने वाला व्यक्ति है और अपनी समस्याओं का ख़ुद हल निकाल सकता है, तो काफ़ी मदद मिलती है। 'हमारा घर हमारा विद्यालय' के तहत होने वाले काम को शिक्षक ज़िला स्तर पर हो रहे वेबिनार में साझा कर रहे हैं। कुछ शिक्षकों के काम को हम

फोटो : राजकुमार रजक, अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन

एक वीडियो सीरीज़ 'उम्मीद जगाते शिक्षक' में रिकॉर्ड भी कर रहे हैं। हर महीने उसका एक वीडियो जारी करते हैं जिससे शिक्षक एक दूसरे से सीख सकें कि क्या काम हो रहा है। यह भी एक अवलोकन है कि मोहल्ला केन्द्र कक्षा में जहाँ दूसरे सरकारी स्कूल के बच्चे आ रहे हैं, वहीं प्राइवेट स्कूल के बच्चे भी आ रहे हैं, और लगता है कि जाति की समस्या (caste dynamics) ख़त्म हो गई है, भेदभाव जैसी चीज़ें नहीं हैं। क्योंकि शिक्षकों का कई समय पर ये मानना होता रहा है कि पालक बच्चों को इन बच्चों के साथ भेजना नहीं चाहते हैं। लेकिन ऐसी स्थिति ने काफ़ी शिक्षकों की मान्यता को हिलाया है। आख़िरी बात यह कि ऐसे में बच्चे आ रहे हैं, इतना सारा काम हो रहा है, ये अपने-आप में एक अच्छा अनुभव रहा है। कम-से-कम ग्रामीण क्षेत्र में बच्चे आ रहे हैं, भोपाल का अनुभव थोड़ा उलटा है। अभी 9वीं से 12वीं तक के स्कूल भी खुले तो 20% हाज़िरी थी।

रजनी : मयंक, अब आप अपनी बात रखें।

मयंक : मैं पिछले 6-7 महीनों में शिक्षकों के साथ हुए अनुभवों, व्यवस्थित प्रयासों को जैसे मैंने समझा है, उनको रखने की कोशिश करूँगा। स्कूलों को सबसे पहले बन्द किया गया था। इसके पीछे बच्चों की सुरक्षा को लेकर बहुत जायज़ क़िस्म की चिन्ताएँ थीं, लेकिन इसके बाद शिक्षा को लेकर जिस तरह की समझ हमने बनाई है, इसमें पूरी तरह से ज़ोर सिर्फ़ पढ़ने और लिखने पर आकर केन्द्रित हो गया है। उन कारकों को हमने नज़रअन्दाज़ किया है जो सीधेतौर पर पढ़ने-लिखने की तरफ़ नहीं जाते, लेकिन सीखने-सिखाने की प्रक्रियाओं को प्रभावित करते हैं। जैसे एक कारक यह है कि जुलाई, अगस्त, सितम्बर के महीनों की स्कूल कैलेंडर में एक बड़ी जगह हुआ करती थी– खेलकूद की गतिविधियों की। वर्तमान परिस्थिति में ज़ोर सिर्फ़ विषयों की पढ़ाई पर है, खेलकूद और सांस्कृतिक गतिविधियाँ अभी हाशिए पर हैं। वैसे को-कैरीकुलर गतिविधियों को हमेशा हाशिए पर डाला जाता रहा है वो एक चिन्ता का विषय है, पर पहले फिर भी कुछ तो हो जाता था। इससे एक क़िस्म का फ़ायदा जो बच्चों को मिलता रहा है वो प्रभावित हो रहा है, साथ ही विविध पृष्ठभूमि से आने वाले बच्चों में आत्मविश्वास पैदा करने के मौक़े इसी तरह के मंचों से सबसे ज़्यादा उभरते हैं और स्कूल के साथ अपने जुड़ाव को लेकर वो और ज़्यादा आगे बढ़ते हैं। दूसरा प्रमुख मुद्दा स्वास्थ्य और पोषण का है।

लॉकडाउन के बाद से स्कूलों में पोषण आहार की पहुँच प्रभावित हुई है। पहला काम, विटामिन ए की गोली का बच्चों के बीच वितरण

सुनिश्चित किया गया। हर साल ऐसे बच्चों का चिह्नांकन शिक्षा विभाग या स्वास्थ्य विभाग के द्वारा किया जाता रहा है जो किसी-न-किसी शारीरिक परेशानी से जूझ रहे हैं और उनके परिवार में अभिभावकों की स्थिति ऐसी नहीं है कि वह अपने ख़र्च पर अपने बच्चे का ज़रूरी इलाज करा पाएँ। लेकिन यह पहल इस पूरे दौर में ठप्प है। दूसरा, स्वास्थ्य को लेकर जिस तरह का दबाव स्वास्थ्य विभाग के ऊपर पड़ा है, उसका असर स्कूल में पढ़ने वाले बच्चों पर भी हुआ है। एक साल में शारीरिक चुनौतियों से जूझने वाले इन बच्चों के साथ आगे क्या स्थितियाँ पेश आएँगी पता नहीं। तीसरी बात स्कूल के आर्थिक पक्ष से जुड़ी है। इस पूरे दौर में एक बड़ी संख्या में स्कूलों को क्वारंटाइन केन्द्र बनाया गया, लेकिन इन केन्द्रों के रखरखाव और इनके सेनेटाइजेशन को लेकर जो माँग शिक्षकों और प्रधान पाठकों द्वारा की गई, उसपर कोई बातचीत नहीं हुई है।

हाल ही में शिक्षकों के साथ चर्चा में ऑनलाइन कक्षा की सीमाओं को लेकर एक बहुत दिलचस्प बात सामने आई कि इन कक्षाओं में बच्चों की लेबलिंग ज़्यादा मज़बूत हुई है। जो बच्चे ऑनलाइन कक्षा ले रहे हैं, वे अच्छे बच्चे हैं और जो बच्चे किसी भी वजह से ऑनलाइन कक्षा का हिस्सा नहीं बन रहे हैं वो ख़राब। हालाँकि कई शिक्षकों को अभिभावकों की पृष्ठभूमि और बच्चों की आर्थिक स्थिति का पता है, लेकिन तब भी यह स्थिति है। ऑनलाइन सीखने-सिखाने को लेकर हुए प्रयास हम सबके सामने हैं और काफ़ी शिक्षक साथी इसमें बहुत अच्छा काम कर रहे हैं। लेकिन ऑनलाइन शिक्षण करना कैसे है और सामान्य कक्षा से ये ऑनलाइन कक्षाएँ किस हद तक भिन्न हैं, ऑनलाइन कक्षाओं के लिए सामग्री कैसे विकसित करनी है, इसको लेकर ज़्यादातर शिक्षकों के पास कोई मदद कोई दिशा निर्देश नहीं थे। छत्तीसगढ़ में हाई स्कूल और हायर सेकेंडरी स्तर के शिक्षकों के लिए तकनीकी का इस्तेमाल शिक्षा में करने के लिए इग्नू की मदद से एक सप्ताह का कोर्स प्रस्तावित किया गया था, हालाँकि ज़्यादातर शिक्षकों ने इसमें भाग नहीं लिया।

दूसरी चुनौती ऑनलाइन कक्षा के लिए इंटरनेट कनेक्टिविटी की थी। इसका एक आर्थिक पक्ष भी है कि डेटा का होना पैसे पर निर्भर है। कई बच्चों के लिए शिक्षक साथियों ने अपने ख़र्च पर फ़ोन रिचार्ज करवाए, लेकिन यह साहस हरेक शिक्षक नहीं कर पाया। मूल बात इसमें यह है कि परिवार पर और शिक्षकों पर ऑनलाइन मोड पर जाने का एक अप्रत्यक्ष आर्थिक दबाव भी पड़ा है। यह भी कि शिक्षक बच्चों के साथ लगातार कॉन्टेक्ट करने की कोशिश कर रहे हैं, लेकिन इन दिनों ने उन्हें एक तरह से स्कूली प्रक्रियाओं के प्रति उदासीन बना दिया है। शिक्षक फ़ोन करके बात करने की कोशिश करते हैं, पर

फोटो : कुलदीप शर्मा, अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन

वो बात नहीं करते हैं। इन प्रक्रियाओं की वजह से शिक्षकों के मन में एक आशंका भी है कि बच्चों का स्कूल न आना और बच्चों का शालात्यागी के रूप में परिवर्तित हो जाना बढ़ेगा। एक और बात शिक्षकों ने महसूस की, कि जब आमतौर पर गर्मियों की छुट्टियाँ होती थीं उनमें कुछ महीने अवकाश के बाद ख़ासतौर पर पहली-दूसरी कक्षा में पढ़ने वाले बच्चों के साथ नए सिरे से काम करने की ज़रूरत होती थी, क्योंकि वे इन डेढ़-दो महीनों में बहुत-सी बातें भूल चुके होते थे। अब छुट्टियों का एक लम्बा दौर हो गया है यह उनके सीखने में कितना ठहराव ला चुका होगा, कहना मुश्किल है। शिक्षकों ने प्रस्तावित भी किया

कि हमें अपने बच्चों का एक बेसलाइन आकलन करना चाहिए ताकि समझ में आए कि फिर से शुरुआत कहाँ से हो? इस दौरान शिक्षकों के ऊपर दबाव भी आए हैं। हम लोग शिक्षकों के समूहों के साथ लगातार जुड़े हुए हैं, उनके साथ व्यक्तिगत बातचीत भी होती है। कुछ शिक्षक सुबह सात बजे कक्षा लेते हैं तो कुछ शिक्षक शाम को 8 बजे कक्षा लेते हैं। वजह यही है कि ये ही वो वक़्त है जब बच्चों के साथ बात किए जाने की सम्भावना बनती है। इसका शिक्षकों की दिनचर्या पर भी प्रभाव पड़ा है और मानसिक एवं मनोवैज्ञानिक तौर पर भी इसका असर पड़ रहा है। शासन के स्तर पर हुए प्रयासों को देखने के लिए cgschool.in वेबसाइट को देख सकते हैं। शासन द्वारा किए गए कुछ मुख्य प्रयासों में है 'लाउडस्पीकर' गुरुजी की शुरुआत, जहाँ पर

फोटो : कुलदीप शर्मा, अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन

शिक्षकों से आग्रह किया गया कि वे गाँव के स्तर पर जाकर साइकिल के माध्यम से अथवा मोटरसाइकिल के माध्यम से पढ़ाने की कोशिश करें तो उन्हें पंचायत के सहयोग से लाउडस्पीकर मुहैया कराएँगे। कुछ ही जगहों पर ये व्यवस्था सुनिश्चित हो पाई। कुछ जगह पंचायतें सहयोग नहीं कर पाईं। इसके आर्थिक कारण भी हैं। यह भी कि ज़्यादातर शिक्षक रायपुर जैसे बड़े शहर से आते हैं, तो गाँव का समुदाय उनके आने को सन्देह की नज़र से देखता है और संक्रमण की आशंकाओं को देखते हुए मना कर देता है।

शासन द्वारा किया गया दूसरा प्रयास 'पढ़ई तुंहर दुआर' है। जहाँ ऑनलाइन कक्षाएँ होती हैं। साथ ही 'पढ़ई तुंहर पारा' भी शुरू किया गया, पारा माने मोहल्ला। इसके तहत शिक्षक गाँव के सामुदायिक भवन, या किसी खुली जगह पर बच्चों की कक्षा लेंगे। एक और कोशिश 'बुल्टू के बोल', था जिसमें शिक्षकों को ग्रामीण इलाक़ों के रिमोट क्षेत्रों में जहाँ इंटरनेट की समस्या है, वहाँ जाकर बच्चों को वर्कशीट, कुछ किताबें बच्चों को देनी थीं या अपने मोबाइल से ब्लूटूथ के सहारे सामग्री ट्रांसफ़र करनी थी। जून और जुलाई 2020 की बात करें तो स्कूलों में शिक्षकों को जाने के निर्देश दिए गए क्योंकि टीसी बननी है, बच्चों की अंकतालिका बननी है, अगली कक्षा में बच्चों को दाख़िला लेना है, और जब शिक्षक स्कूल गए तब उनसे आग्रह किया गया कि आप अपने स्कूल में बच्चों की सहमति से, उनके अभिभावकों की सहमति से ही कुछ कक्षाएँ लें। ये 4-5 प्रयास शासन ने अपनी तरफ़ से किए। इस दौरान शिक्षकों ने बच्चों के साथ जुड़ाव बरक़रार रखने के लिए अपने स्तर पर कई पहल की हैं। जैसे, अभंगपुर ब्लॉक में शिक्षकों के एक समूह ने अपने-अपने विद्यालयों में और उन सारे विद्यालयों में जिनके शिक्षक उनके सम्पर्क में हैं, सबने मिलकर ब्लॉक स्तर पर समय-समय पर, कभी गणित पर, कभी सामाजिक विज्ञान पर, कभी भाषा पर, क्विज़, भाषण, कविता पाठ जैसी प्रतियोगिताओं का आयोजन करना शुरू किया।

बच्चों की एक भाषा प्रतियोगिता भी थी जिसमें प्राथमिक, उच्च प्राथमिक, उच्च माध्यमिक, हायर सेकेंडरी, सभी स्तरों के बच्चे शामिल हुए। इस तरीक़े के ऑनलाइन प्रयासों के माध्यम से भी शिक्षकों ने बच्चों के साथ अपने जुड़ाव को बरक़रार रखने की कोशिश की है और इसके साथ-साथ उनको प्रोत्साहित करते रहने के लिए सर्टिफ़िकेट जैसी चीज़ों का भी प्रावधान किया है। सीखने-पढ़ने की गतिविधियाँ, सीखने-पढ़ने के तरीक़े की तरफ़ ये रुझान हाल फ़िलहाल तीन महीनों में ज़्यादा साफ़ दिखाई दिया है, इससे पहले तो छुट्टी जैसा दौर था।

शिक्षकों के साथ ऊर्जावान जुड़ाव की बात करें तो प्रभावी तरीक़ा यह लगता है कि सबसे पहले एक चेतना बनाए जाने की ज़रूरत थी कि आने वाले अकादमिक सत्र में किस तरह की चुनौतियाँ सामने आने वाली हैं और उसके लिए अभी से तैयारी नहीं की तो हम कितनी जगहों पर असफल हो सकते हैं। इसको लेकर हमने सामुदायिक सलाहकार समितियों के साथ बात की और उसके बाद प्रधानाचार्य और स्कूल के प्रभावी शिक्षक सभी से बात की। इस प्रक्रिया को हम अभी आकार दे रहे हैं। शिक्षकों में लघु पाठ्यक्रमों के प्रति रुझान बढ़ा है।

रजनी : शुक्रिया।

मैं बातचीत के मुख्य बिन्दुओं को रेखांकित करना चाहूँगी। एक मुख्य बात यह है कि अलग-अलग स्तर पर काम जारी हैं। दूसरा यह कि शिक्षक, बच्चे और बच्चों के अभिभावक भी स्कूल की कमी महसूस कर रहे हैं। तीसरी बात, इन परिस्थितियों में समुदाय में बच्चों की शिक्षा के लिए शिक्षक और अभिभावक का सहयोग दिखा है कि स्कूल और समुदाय एक दूसरे के साथ कैसे आ सकते हैं और कैसे एक जुड़ाव बनाकर बच्चों की शिक्षा के लिए काम कर सकते हैं। चौथी बात ऑनलाइन शिक्षण के प्रयास और उनकी सीमाओं की है।

ज़्यादा-से-ज़्यादा बच्चों से जुड़ने के लिए मोहल्ला शिक्षक या वॉलंटियर्स बनाना जो उन बच्चों के साथ में काम करेंगे, इस तरह के प्रयास भी हुए हैं। इनमें से कौन-से प्रयास आगे जा सकते हैं और ज़्यादा अच्छे साबित हो सकते हैं यह समय रहते ही पता चलेगा। एक और बात यह कि स्थितियाँ हर जगह अलग-अलग हैं, कहीं पर किसी तरह का काम किया जा सकता है और कहीं पर किसी और तरीक़े का काम किया जा सकता है। इस तरह की बहसें भी इस समय शुरू हुई हैं कि स्वास्थ्य और शिक्षा में से हम किसको चुनें। लेकिन स्कूल महज़ सीखने-सिखाने की जगह नहीं है, बल्कि स्कूल उनके लिए एक तरह से ऐसी जगह है जो उनको ज़्यादा आज़ादी और स्वतंत्रता देती है– अपने मन का करने की। घर के तनाव स्कूल में नहीं होते और साथ ही स्कूल के साथ में जो अन्य सुविधाएँ जो सेहत को लेकर बच्चों को मिलती हैं वो भी बच्चों को इस दौर में नहीं मिल पा रही हैं।

रजनी : सवाल ले सकते हैं अब।

हृदयकान्त दीवान : कोई और इसमें कुछ कहना या जोड़ना चाहे। मतलब इससे क्या निहितार्थ निकलते हैं?

मुनीर : मुझे 3 चीज़ें समझ में आईं। हमें आने वाले समय के लिए हर बच्चे और शिक्षक को सूचना प्रौद्योगिकी से परिचित कराना होगा। दूसरा, एक वैकल्पिक पाठ्यचर्या और शिक्षणशास्त्र को लेकर जब तक हमारी समझ नहीं होगी तब तक हम बच्चों के साथ जुड़ नहीं पाएँगे। पिछले 4-5 महीनों में एक चीज़ और मुझे बहुत स्पष्ट नज़र आई कि शिक्षक, बच्चे और समुदाय के साथ हमारा जो सम्बन्ध था वो बहुत मज़बूत नहीं था। चाहे प्राइवेट स्कूल हों, चाहे सरकारी स्कूल हों, बच्चे, समुदाय और शिक्षक के बीच रिश्ते कैसे हैं इसे कोविड-19 की परिस्थिति ने बहुत मज़बूती से उभारा है। प्राइवेट स्कूल की स्थिति भी इस तरह की परिस्थिति से निपटने के लिए, उनसे हमारा रिश्ता कितना मज़बूत है ये बहुत बड़ा रोल अदा करता है।

फोटो : खुशबू, एकलव्य फ़ाउण्डेशन

रश्मि : मैं इस बात से सहमत हूँ कि सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी अगर पाठ्यक्रम में सम्मिलित हो जाए और शिक्षकों के लिए एक प्रशिक्षण मॉड्यूल जैसा आ जाएगा तो मददगार होगा। दूसरी चीज़ वैकल्पिक शिक्षणशास्त्र की है। हमारी अभी की पढ़ाई, सामान्य पढ़ाई नहीं है। हमें यह स्वीकार करना होगा कि हम पाठ्यक्रम को पूरा करने को लेकर काम नहीं कर सकते। ऑनलाइन शिक्षण में हम बहुत सारी चीज़ों को छू भी नहीं पा रहे हैं, जैसे– प्रयोग करवाना आदि। हम पढ़ा रहे हैं, बार-बार अपने अनुभवों को साझा भी कर रहे हैं लेकिन उसकी साप्ताहिक रिपोर्टिंग इतनी ज़्यादा हो रही है कि डेटा संग्रहण में ज़्यादा समय लग रहा है, और वो भी ऑनलाइन जा रहे हैं वहाँ भी शिक्षक जूझ रहे हैं।

रजनी : धन्यवाद रश्मिजी। अनूपजी, छोटेलालजी आप संक्षिप्त में कुछ जोड़ना चाहेंगे।

छोटेलाल : पूरे अनुभव से ये चीज़ और पुख़्ता हुई है कि बच्चों के साथ सन्दर्भ से सीखने की अप्रोच काफ़ी प्रभावी होती है। दूसरा, एक टीम की तरह काम करने पर काम काफ़ी सरल हो जाता है और उस काम में लोगों का सीखना और बेहतर ढंग से करने का जज़्बा निकलकर आता है। तीसरी बात स्कूल और समुदाय के बीच एक मज़बूत रिश्ते की है। बिना मज़बूत सम्बन्धों के जो भी हम कोशिश कर रहे होते हैं, उसमें बच्चों के साथ सीखने के जुड़ाव में जो एक अर्थ और एक अपनेपन की भावना है वो नहीं बनती है। अतः शिक्षक, बच्चे, अभिभावक के बीच सम्बन्धों को सीखने-सिखाने की पूरी प्रक्रिया के कोर की तरह से देखा जाना चाहिए। धन्यवाद।

रजनी : कोई और संक्षिप्त में अपनी बात कहना चाहे तो कहें।

वक्ता : आज की बातचीत काफ़ी प्रेरणादायक रही। जिस तरह की चुनौतियाँ हमारे सामने थीं / हैं उनमें हताशा भी आती थी, लेकिन इस बातचीत को सुनकर लगता है कि पूरे देश में यही स्थिति है। बहुत सारे लोग इनसे जूझ रहे हैं, और हतोत्साहित नहीं हो रहे हैं। इस संवाद के माध्यम से या इस बीच में जो भी मेरी समझ बनी है, उसमें मुझे यही लगता है कि इस परिस्थिति का कोई एक निश्चित समाधान नहीं है। सिर्फ़ ऑनलाइन ही एक ऐसा माध्यम है या जो वॉलंटियर्स कर रहे हैं वही एक ऐसा माध्यम है जो कारगर होगा, ऐसा नहीं है। मुझे लग रहा है कि हर प्रयास अपने-अपने स्तर पर चल रहा है और वो किसी एकीकृत तरीक़े से परिणाम लाने का काम कर रहा है। धन्यवाद।

गुरबचन सिंह : आप सभी का इस महत्त्वपूर्ण संवाद में भाग लेने के लिए, इसे एक महत्त्वपूर्ण आयाम देने और वैचारिक रूप से समृद्ध बनाने के लिए बहुत-बहुत शुक्रिया।

मुद्रक तथा प्रकाशक मनोज पी. द्वारा अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन फॉर डेवलपमेंट के लिए अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन, प्लॉट नं. 163-164, त्रिलंगा कोऑपरेटिव सोसाइटी, E-8 एक्सटेंशन, त्रिलंगा भोपाल, मध्यप्रदेश 462039 की ओर से प्रकाशित एवं गणेश ग्राफ़िक्स, 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस काम्प्लेक्स, एम.पी. नगर, जोन-1 भोपाल द्वारा मुद्रित।

सम्पादक : गुरबचन सिंह